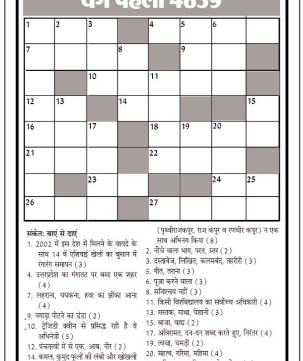

**अमृत वाणी**

यदि रोटी हो तो सभी दुख झेले जा सकते है।
*-कर्वेन्टीज*

## बाइकर्स के खिलाफ शिकायतों का अंबार

**नगर में बाइकर्स की मनमानी के खिलाफ यातायात पुलिस महीनों ही नही बल्कि वर्ष भर लगातार कार्यवाही करती रही है। उनके यातायात नियम विरुध्द आचरण के लिए उन पर बार बार जुर्माना लगाती है। यहां तक कि कुछ मौकों पर उनके वाहन जब्त भी किए गए है फिर भी बाइकर्स में कोई सुधार नजर नही आता। शहर की सड़कों पर से जब कोई युवा अपनी बाइक पर निकलता है तब ऐसा लगता है कि वह बाइक चला नही रहा बल्कि उड़ा रहा है। बेफिक्र, बेलगाम, बिना किसी नियम कानून, न कोई भय, न किसी की परवाह, बस वे केवल अपनी बाइक उड़ाने में मस्त। बीच बीच में कर्ण भेदी हॉर्न तो कभी बाइक की ही डराने वाली आवाज, जिससे सड़क पर विद्यमान लोग कांप उठे, कभी तीन लोगों को बिठाकर यातायात नियमों का मजाक उड़ाते हुए तो कभी नंबर प्लेट के साथ मनमानी करते हुए ऐसे अपनी वाहन दौड़ाते है मानो समूची सड़क उनकी जागीर हो। यही वजह है कि थोड़े थोड़े दिनों के अंतराल में यातायात विभाग को फिर से पानी सर के ऊपर चढ़ता नजर आता है तो वह इन मनचले बाइकर्स पर नकेल कसने की तैयारी करती है। इस समय यातायात पुलिस बाइक पर तीन सवारी, बिना नंबर की गाड़ी एवं अधिक आवाज वाली गाड़ियों से शहर में उत्पात मचाने वाले बाइकर्स पर सख्ती से कार्यवाही कर रही है। मॉडीफाइड बाइक के साइलेंसर के जरिए पटाखों जैसी तेज आवाज निकालने और वाहनों के आगे पीछे लगने वाली नंबर प्लेट परिवहन विभाग व्दारा निर्धारित मानदंडों के अनुरुप नही लगाने वाले चालकों पर यातायात पुलिस विशेष रुप से नजर रख रही है।**

**ऐसा होना जरुरी भी है। सच कहा जाय तो ऐसे कतिपय मनचले वाहन चालकों के कारण पूरी यातायात व्यवस्था तितर बितर हो जाती है। लोग असुरक्षित महसूस करते है। हर क्षण दुर्घटना की आशंका बनी रहती है सो अलग। वैसे भी किसी को जानबूझकर यातायात नियमों के उल्लंघन की अनुमति कैसे दी जा सकती है खासकर वे नियम जो उनके अपने एवं दूसरों के लिए जानलेवा साबित हो सकते है। यातायात पुलिस व्दारा अब तक ऐसे तत्वों के खिलाफ अभियान चलाकर मॉडिफाइड बाइक सायलेंसर लगाने वाले100 से अधिक चालको पर कार्यवाही की गई। ऐसा किया जाना दूसरों तक सख्त संदेश पहुंचाने के लिए भी जरुरी है।**

**अब देखना यह होगा कि यातायात पुलिस की इन कार्यवाहियों का असर कब तक बाइकर्स पर रहता है। दरअसल जब उन्हें इतना समझ आ जायगा कि यातायात पुलिस की ये सारी कार्यवाहियां उनके ही भले के लिए ही है, तभी उनकी ये सारी हरकते स्वतः ही खत्म हो पाएगी।**

## राज-काज

### केजरीवाल और राहुल का फर्क

कांग्रेस नेता राहुल गांधी सचमुच जोखिम ले रहे हैं। राजनीति खास कर चुनावी राजनीति की जो टैक्टिकल लाइन होती है उसे वे छोड़ कर भारत जोड़ो यात्रा कर रहे हैं। जिस दिन उन्होंने विनायम दामोदर सावरकर का नाम लेकर और उन पर हमला करके कांग्रेस को बैकफुट पर ला दिया उसके एक दिन बाद ही उनकी यात्रा में सामाजिक कार्यकर्ता और नर्मदा बचाओ आंदोलन का चेहरा रहीं मेधा पाटकर शामिल हुईं। राहुल उनके कंधे पर हाथ रख कर चलते दिखे। भारतीय जनता पार्टी ने इसे बड़ा मुद्दा बना दिया है। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनावी सभा में कहा कि मेधा पाटकर ने गुजरात और गुजरातियों को देश भर में बदनाम किया और ऐसे आदमी के साथ कांग्रेस नेता यात्रा कर रहे हैं। अब सोचें, क्या राहुल गांधी को पता नहीं था कि मेधा पाटकर के साथ यात्रा करने पर गुजरात में पार्टी को नुकसान हो सकता है? उनको पता था फिर भी उन्होंने अपनी विचारधारा की वजह से जोखिम लिया। इसी मामले में बिना विचारधारा वाली आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल और राहुल गांधी का फर्क दिखता है।

# हैवानियत की सारी हदें पार करता इंसान

क्रूरता की जब कभी बात होती है तो लोग जानवरों जैसे व्यवहार की मिसाल देते हैं। परन्तु इंसान जैसे बुद्धिमान समझे जाने वाली प्राणी के हवाले से कुछ ऐसी घटनायें सामने आने लगी हैं गोया अब इंसानों की क्रूरतम कारगुज़ारी के लिये पशुओं जैसी क्रूरता या हैवानियत की बात करने जैसी उपमायें भी छोटी मालूम होने लगी हैं। क्योंकि किसी पशु या उसके द्वारा की जा रही हैवानियत की मिसाल देना इसलिये भी बेमानी है क्योंकि किसी पशु द्वारा अपने स्वभावानुसार पशुता दिखाना या किसी जानवर द्वारा अपना पाशविक स्वभाव या पशुवृत्ति दर्शाना उसकी मनोवृति में शामिल है। वे किसी नियम क़ानून के अधीन नहीं आते बल्कि उनका सम्पूर्ण आचरण वैसा ही होता है जैसा प्रकृति ने उन्हें बख़ूशा है। परन्तु इंसान को तो प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। अपनी बुद्धि के सदुपयोग से यही अशरफ़उल.मख़लूक़ात आज चाँद और मंगल के रास्ते नाप रहा है। इस संसार में समाज के ग़रीब व पिछड़े लोगों की सहायता के लिये अनेक बड़े से बड़े संगठन बनाकर मानव ने अपने कोमल हृदयी होने का सुबूत दिया है। पूरा विश्व समाज किसी न किसी रूप में एक दूसरे पर निर्भर है। गोया इसी मानवीय सदबुद्धि विश्वास और सहयोग की बदौलत ही दुनिया आगे बढ़ रही है।

परन्तु इसी मानव समाज में ऐसी क्रूरतम प्रवृति के लोग भी पाये जाने लगे हैं जिनके आगे पशुओं की पशुता और राक्षसों का राक्षसीपन भी फीका पड़ जाये। मनुष्य द्वारा मनुष्य की ही हत्या किये जाने की घटनायें तो प्राचीन काल से होती आ रही हैं। सत्य.असत्य की लड़ाई के नाम पर युद्ध और धर्म युद्ध के नाम पर आन.बान.शान के लिये ज़र.जोरू और ज़मीन की ख़ातिर ऊंच.नीच धर्म .जाति आदि को लेकर मानव समाज एक दूसरे के ख़ून का हमेशा से ही प्यासा रहा है। परन्तु आज के दौर में जबकि तथाकथित धर्म का बोलबाला है प्रवचन कर्ताओं की पूरी फ़ौज दिन रात समाज को ज्ञान और नैतिकता का पाठ पढ़ाती रहती है। धार्मिक समागमों में भीड़ पहले से कई गुना बढ़ती जा रही है। देश में एक से बढ़कर एक लोकप्रिय प्रेरक लोगों को जीने की कला और सफल जीवन जीने के गुण सिखाते रहते हैं। दूसरी और इंसान है कि अपने आचरण कृत्यों व सोच विचारों के लिहाज़ से बद से भी बदतर होता जा रहा है। बलात्कार मासूम बच्चियों से बलात्कार सामूहिक बलात्कार और इन सब के साथ ऐसी वहशियाना हरकतें करना कि पीड़िता तड़प तड़प कर जान दे दे ऐसे कुकृत्य और ज़ुल्म तो जानवरों को भी करते नहीं देखा गया इंसानों को ज़िंदा जला देना किसी व्यक्ति को वाहन में बाँध कर उसे सड़कों पर घसीट कर मार डालना इतनी बेरहमी आख़िर कोई इंसान कैसे कर सकता है और अब तो इन्सान इंसान को मारकर उसकी लाशों के टुकड़े करने में भी पीछे नहीं रहा। राजधानी दिल्ली में एक व्यक्ति ने लिव.इन रिलेशन शिप में रह रही अपनी एक महिला मित्र की न केवल हत्या करदी बल्कि उसके शरीर को 35 टुकड़ों में काट कर उन अंगों को 18 दिनों तक हत्यारा दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में नालों व तालाबों में फेंकता रहा। दिल्ली का ही तंदूर काण्ड तो देश कभी भूल ही नहीं सकता जबकि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को मार कर उसकी लाश के टुकड़े कर उन्हें तंदूर में जला दिया था। कोई बाप ने अपनी ही जवान बेटी की गोली मार कर हत्या कर उसकी लाश बड़ी बेरहमी से एक सूटकेस में ठूंस कर यमुना एक्सप्रेस वे पर सड़क किनारे लाश से भरा सूटकेस फेंक गया। बंगाल में एक नेवी अधिकारी को उसकी पत्नी और बेटे ने मिलकर पहले तो जान से मारा फिर बाथरूम में उसकी लाश रखकर आरी से उसके शरीर के छः टुकड़े किये और उन्हें इलाक़े के विभिन्न हिस्सों में फेंक दिया। पति पत्नी और लिव इन रिलेशन शिप में होने वाली हत्याओं का तो सीधा अर्थ है भरोसे और विश्वास की हत्या। पिता. पुत्र. मां. बहन. भाई. बहनोई.साले आदि संबंधों के मध्य होने वाली हत्याओं का अर्थ है रिश्तों का क़त्ल। परन्तु आज के युग में तो रिश्तों और भरोसों का क़त्ल गोया सामान्य घटना बनती जा रही है।

कभी कभी तो विचार आता है कि ऐसी घटनाओं में प्रायः एक दो चार सिर फिरे व क्रूर प्रवृति के लोग ऐसे कारनामे अंजाम दे डालते हैं। और यदि यहाँ अधिक लोग होते तो शायद ऐसी घटना न घटती। परन्तु ऐसे विचार भी तब बेमानी नज़र आने लगते हैं जब हम दंगाइयों की सामूहिक भीड़ की क्रूरता पर नज़र डालते हैं। याद कीजिये 1984 में एक धर्म विशेष के लोगों को किस बेरहमी से क़त्ल किया गया था। भीड़ ज़िंदा लोगों को टाँगें पकड़ कर मारते हुये खींचते हुये जगह जगह इंसानों की जलती चिताओं में फेंक रही थी। गले में जलते हुये टायर डाल कर हत्यायें हो रही थीं। लोगों को उनके घरों में आग लगाकर ज़िंदा जलाया जा रहा था। आम लोग तो क्या पुलिसकर्मी भी इन्हें बचाने नहीं आ रहे थे। 2002 का गुजरात याद कीजिये। कैसे ट्रेन के डिब्बे में आग लगाकर दंगाइयों ने 59 लोगों को ज़िंदा जला दिया था। उसके बाद गुजरात के बड़े क्षेत्र में दंगाइयों द्वारा महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार महिलाओं का स्तन काटा जाना, उनके पेट फाड़ कर बच्चा बाहर निकालना शरीर के टुकड़े टुकड़े करना धर्म विशेष की पूरी की पूरी बस्ती आग के हवाले कर देना, और इस तरह के न जाने कितने ज़ुल्म धर्म के नाम पर धर्मांध भीड़ द्वारा दिल्ली गुजरात जैसी कई जगहों पर किये जाते रहे हैं।

कुछ अति शरारती तत्व हमारे ही समाज में ऐसे भी हैं जो केवल अपने राजनैतिक लाभ के लिये अपने आक़ाओं के इशारे पर ऐसी क्रूरतम घटनाओं में अपराधी की धर्म.जाति देखकर ही प्रतिक्रिया करते हैं। यह चलन और भी बेहद ख़तरनाक है। यदि हत्यारा या जघन्य अपराधी उनकी अपनी बिरादरी या धर्म का है तो वे ख़ामोश रहेंगे। केवल ख़ामोश ही नहीं बल्कि प्रायः अपराधी यहाँ तक कि हत्यारे बलात्कारी व सामूहिक बलात्कार के दोषी का खुलकर पक्ष भी लेने लगेंगे। और यदि अपराधी दूसरे धर्म.जाति का है फिर तो समाज में आग लगाने की पूरी कोशिश करेंगे। ऐसे लोगों की भी गिनती क्रूर अपराधी मानसिकता रखने वालों में ही की जानी चाहिये। समाज को ऐसे लोगों व उनके इरादों के प्रति सचेत रहने की ज़रुरत है। विशेषकर हमारे समाज को ही इस बात पर चिंतन मंथन करने की ज़रुरत है कि आख़िर क्या वजह है और उसके संस्कारों में क्या कमी रह गयी है कि आज इंसान हैवानियत की सारी हदें पार करता जा रहा है।

**निर्मल रानी**
( ये लेखक के अपने विचार है )

# अपनों से बेईमानी,
## पतन की निशानी

हम दूसरों की आर्थिक स्थिति पर ज्यादा ध्यान देते हैं। अपनी स्थिति से असंतुष्टि ही हमें बेईमानी की तरफ धकेलती है। गरीब लोग अमीर बनने के चक्कर में और अमीर लोग अधिक अमीर बनने के चक्कर में छोटा रास्ता पकड़ते हुए धड़ाधड़ सब कुछ पा लेना चाहते हैं। छोटे रास्ते का अंकुर ही भविष्य में बेईमानी का पौधा बन जाता है। चाहे गाँवों में जमीन.जायदाद के विवाद हों या फिर शहरों में लोगों का अपने पड़ोसियों से छोटी.छोटी बातों पर होने वाले झगड़े हों, सभी जगह हम दूसरों का हक छीनना चाहते हैं। यह कभी.कभी भौतिक लाभ में मदद करता हैय यह सजा आदि से बचने में मदद करता है। वहीं झूठ बोलना भी परेशानी खड़ी कर सकता है। झूठ बोलना संज्ञानात्मक रूप से क्षीण हो सकता है यह इस जोखिम को बढ़ा सकता है कि लोगों को दंडित किया जाएगा यह लोगों को खुद को अच्छे लोगों के रूप में देखने से रोककर उनके आत्म.मूल्य को खतरे में डाल सकता हैए और यह आम तौर पर समाज में विश्वास को नष्ट कर सकता है। जब आप झूठ बोलते हैं, तो आप जो कह रहे हैं उस पर विश्वास करने के लिए खुद को धोखा देते हैं।

हमारे समाज में अक्सर ईमानदारी और बेईमानी को लेकर चर्चाएं होती रहती हैं। बेईमान व्यक्ति भी आखिरी दम तक स्वयं को ईमानदार साबित करने की कोशिश करता है। जब हम दूसरों का हक छीनने की कोशिश करते हैं तो हमारे अंदर बेईमानी के अंकुर अपने आप पैदा हो जाते हैं। पैसे के पीछे पागल होना ही ऐसी स्थिति के लिए जिम्मेदार होता है। ईमानदारी केवल सच बोलने के बारे में नहीं है। यह अपने और दूसरों के साथ वास्तविक होने के बारे में है कि आप कौन हैंए आप क्या चाहते हैं और आपको अपना सबसे प्रामाणिक जीवन जीने के लिए क्या चाहिए। ईमानदारी खुलेपन को बढ़ावा देती है हमें सशक्त बनाती है और हमें तथ्यों को प्रस्तुत करने के तरीके में निरंतरता विकसित करने में सक्षम बनाती है। ईमानदारी हमारी धारणा को तेज करती है और हमें अपने आस.पास की हर चीज को स्पष्टता से देखने की अनुमति देती है।

ईमानदारी आत्मविश्वास विश्वास पैदा करती है हमारी इच्छा शक्ति को सशक्त करती है और दूसरों के लिए हमारे उदाहरण को देखने और देखने के लिए सबसे अच्छे तरीके से हमारा प्रतिनिधित्व करती है। ईमानदारी हमारे जीवन शक्ति में सुधार करती है। ईमानदारी चरित्र के प्रमुख घटकों में से एक है और किसी भी सफलए जिम्मेदार व्यक्ति के सबसे प्रशंसनीय गुणों में से एक है। ईमानदारी एक मूलभूत कारक है यह किसी के चरित्र के निर्माण में मदद करती है। एक ईमानदार व्यक्ति अपने व्यावहारिक और आध्यात्मिक जीवन में हमेशा सफल होता है।

वास्तविकता यह है कि अभावग्रस्त लोग पैसे के पीछे नहीं भागते। वे अपनी न्यूनतम जरूरतों के लिए संघर्ष करते हुए सिर्फइतना कमाना चाहते हैं कि जिससे समय.समय पर उनकी जिंदगी के सभी कार्य पूर्ण होते रहें। हो सकता है कि उनमें ज्यादा पैसा कमाने की थोड़ी.बहुत चाह होती हो लेकिन उनकी इस चाहत में एक सकारात्मकता होती है।

यहां तक कि एक छोटा सा झूठ बोलने से भी हमारी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने का जोखिम होता है, लेकिन दूसरों के हम पर भरोसा करने की प्रवृत्ति भी कम हो जाती है। इसके अलावा एक झूठ अक्सर दूसरे अधिक महत्वपूर्ण झूठ को बोलने की आवश्यकता की ओर ले जाता है जो खोजे जाने पर और भी अधिक नकारात्मक परिणामों का जोखिम उठाता है। अंत में हम आवश्यक रूप से एक छोटे से झूठ को भी बोलने के परिणामों की भविष्यवाणी नहीं कर सकते हैं, और यदि इस तरह के परिणाम हमारे अनुमान से अधिक महत्वपूर्ण रूप से प्रतिकूल हो जाते हैं तो हमारी जिम्मेदारी की भावना और इसलिए अपराधबोध हमें कल्पना से कहीं अधिक परेशान कर सकता है आदि।

सवाल यह है कि हम ईमानदारी से बेईमानी की तरफ कैसे खिंचे चले आते हैंघ् समाज बेईमानी को एक बड़ी बुराई के रूप में देखता है, इसके बावजूद समाज के एक बड़े हिस्से का झुकाव बेईमानी की तरफ रहता है। बेईमानी का गरीबी और अमीरी से कोई लेना.देना नहीं है।

**डा.सत्यवान सौरभ**
( ये लेखक के अपने विचार है )

## उपभोक्ता अधिकार के पक्ष में

उड़ानों के रद्द होने या देरी से उड़ने के कारण यात्रियों को जो नुकसान हुआ, उसकी भरपाई अब विमान कंपनियों को करनी होगी। अमेरिका ने कहा है कि इन कंपनियों ने इतनी देर की जिससे ग्राहकों के अधिकारों का उल्लंघन हुआ।

अमेरिका में छह विमानन कंपनियों को ग्राहकों के लगभग दस अरब रुपये लौटाने का आदेश दिया गया है। इन कंपनियों में भारत की एयर इंडिया भी है। इन कंपनियों पर लगभग साढ़े सात करोड़ रुपये का जुर्माना भी लगाया गया है। एयर इंडिया से अपने ग्राहकों को 12.15 करोड़ डॉलर यानी लगभग नौ अरब 85 लाख रुपये लौटाने को कहा गया है। मामला कोविड-19 महामारी के दौर का है। तब उड़ानों के रद्द होने या देरी से उड़ने के कारण यात्रियों को जो नुकसान हुआ, उसकी भरपाई अब विमान कंपनियों को करनी होगी। अमेरिका के परिवहन मंत्रालय ने कहा है कि इन कंपनियों ने इतनी देर की जिससे ग्राहकों के अधिकारों का उल्लंघन हुआ। 2020 की शुरुआत में जब महामारी का फैलना शुरू हुआ, तो लगभग सभी देशों ने अपनी सीमाएं बंद कर दी थीं और आवाजाही बंद हो गई थी। इस वजह से विमानों की आवाजाही या तो बंद हो गई या अत्यधिक प्रभावित हुई। तब हजारों लोगों ने परिवहन मंत्रालय को विमानन कंपनियों की शिकायत की थी। सबसे ज्यादा शिकायतें रिफंड ना मिलने की हुई थीं।

अमेरिका के परिवहन मंत्रालय ने कहा है कि जब अमेरिकी लोग किसी एयरलाइन की टिकट खरीदते हैं, तो वे उम्मीद करते हैं अपनी मंजिल पर सुरक्षित, पूरे भरोसे के साथ और वाजिब खर्च में पहुंच जाएंगे। मंत्रालय ने कहा है- 'हमारा काम यह सुनिश्चित करना है कि विमानन कंपनियां इन उम्मीदों को पूरा करें।' तो कंपनियों पर कार्रवाई की गई है। मंत्रालय ने कहा है कि अन्य कार्रवाइयों की तैयारी भी चल रही है। कई मामलों में जांच भी जारी है।

### सुडोकू पहेली क्रमांक- 4839

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 6 | | | | 9 | | 8 | 5 |
| 9 | 4 | | | | 6 | | | 2 |
| | 8 | 1 | | | 4 | | | 3 |
| 6 | | | | | | 1 | | 8 |
| | | | | 3 | | | | |
| 2 | | 8 | | | | | | 9 |
| 3 | | | 1 | | | 8 | 4 | |
| 8 | | | 6 | | | | 5 | 7 |
| 4 | 7 | | 2 | | | | 3 | |

**नियम :** प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

### सुडोकू पहेली क्र. 4838

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | 7 | 1 | 6 | 9 | 3 | 2 | 4 | 8 |
| 9 | 3 | 6 | 2 | 8 | 4 | 1 | 7 | 5 |
| 8 | 4 | 2 | 5 | 1 | 7 | 6 | 3 | 9 |
| 7 | 8 | 9 | 3 | 2 | 5 | 4 | 6 | 1 |
| 2 | 6 | 5 | 1 | 4 | 9 | 7 | 8 | 3 |
| 3 | 1 | 4 | 7 | 6 | 8 | 5 | 9 | 2 |
| 1 | 5 | 3 | 9 | 7 | 6 | 8 | 2 | 4 |
| 4 | 9 | 7 | 8 | 5 | 2 | 3 | 1 | 6 |
| 6 | 2 | 8 | 4 | 3 | 1 | 9 | 5 | 7 |

### वर्ग पहेली 4839

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | ▨ | 4 | 5 | 6 | |
| 7 | | | 8 | ▨ | 9 | | ▨ |
| | ▨ | 10 | | 11 | | | ▨ |
| 12 | 13 | ▨ | 14 | | ▨ | ▨ | 15 |
| 16 | | 17 | ▨ | 18 | 19 | 20 | |
| 21 | | | ▨ | 22 | | | ▨ |
| | ▨ | 23 | | ▨ | ▨ | 24 | 25 |
| 26 | | | ▨ | 27 | | | |

**संकेत: बाएं से दाएं**

1. 2002 में इस देश में मिलने के वायदे के साथ 14 वें एशियाई खेलों का बुसान में रंगारंग समापन (3)
4. उत्तरप्रदेश का गंगातट पर बसा एक शहर (4)
7. लहराना, धधकना, हवा का झोंका आना (4)
9. नगाड़ा पीटने का डंडा (2)
10. ट्रेजिडी क्वीन से प्रसिद्ध रही है ये अभिनेत्री (5)
12. पंचतत्वों में से एक, आब, नीर (2)
14. कमल, कुमुद फूलों की लंबी और खोखली नली (2)
16. संतान, वंशज (3)
18. एक मंगल वाद्य, मृदंग (4)
21. याद करने के लिए बारंबार दोहराना (3)
22. रोचना, टीका, धर्मचिन्ह (3)
23. कागज के चौबीस तत्वों की गड्डी, सेनिकों की टोली (2)
24. इस समय, इस वक्त (2)
26. भूमि आदि पर लगने वाला कर, भूकर (3)
27. जिसकी सभी सतह समान हों (4)

**ऊपर से नीचे**

1. भूतकाल, वर्तमान और भविष्यकाल में, इस फिल्म में कपूर परिवार की तीनों पीढ़ियों (पृथ्वीराजकपूर, राज कपूर व रणधीर कपूर) न एक साथ अभिनय किया (8)
2. नीचे वाला भाग, परत, स्तर (2)
3. दस्तावेज, लिखित, कलमबंद, तहरीरी (3)
5. गीत, तराना (3)
6. पूजा करने वाला (3)
8. सनिश्चय नहीं (3)
11. किसी विश्वविद्यालय का सर्वोच्च अधिकारी (4)
13. मस्तक, माथा, पेशानी (3)
15. बाजा, वाद्य (2)
17. अविरामत, दन-दन शब्द करते हुए, निरंतर (4)
19. त्वचा, चमड़ी (2)
20. महत्व, गरिमा, महिमा (4)
25. शक्ति, ताकत, शिकन, मरोड़, ऐंठन (2)

### वर्ग पहेली 4838 का हल

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | शो | क | कु | मा | र | ▨ | ब |
| प | ला | श | ▨ | ▨ | ज | प | ना |
| रा | ▨ | ▨ | मं | द | क | र | ना |
| गि | ज | री | दो | स्त | ▨ | ख | ▨ |
| ता | ब | ▨ | द | ▨ | न | ▨ | ग |
| ▨ | न | ▨ | री | ता | फा | रि | या |
| छा | ▨ | पो | ▨ | न | स | ▨ | ना |
| या | दें | ▨ | स | ना | त | न | ▨ |